

खदिरैर्य von खदिर gaṇa उत्करादि zu P. 4, 2, 90.

खदिरापम (ख + उपमा) n. eine Art Mimose (कदर) RATNAM. im ÇKDr.

खद्वरक m. N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4, 1, 112. — Vgl. खद्वर.

खद्वरवासिनी (ख + द्वर - वा०) f. N. pr. einer buddhistischen Göttin TRIG. 1, 1, 18.

खद्य (खद्य?) adj. von खद (खट?) gaṇa गवादि zu P. 5, 1, 2.

खद्योत (ख + द्योत) 1) m. a) ein leuchtendes fliegendes Insect AK. 2, 5, 28. TRIG. 2, 3, 35. H. 1213. Hār. 73. अङ्गारः खद्योतमात्रः KṢAND. Up. 6, 7, 3. MBH. 3, 10336. 15827. 4, 2048. 14, 485. R. 6, 19, 28. Suçr. 2, 313, 9. 316, 21. विकीर्यमाणान्खद्योतिर्वृक्षांस्तेजोभिरेव च 317, 13. MEGH. 79. PRAB. 81, 4. Bhāg. P. 6, 16, 46. — b) die Sonne ĠATĀDH. im ÇKDr. — 2) f. आ (sc. दार) das wie ein leuchtendes Insect glänzende Thor, Bez. des einen Auges: खद्योताविर्मूर्खी च प्राग्द्वारवेकत्र निर्मिते Bhāg. P. 4, 23, 47. खद्योताविर्मूर्खी चात्र नेत्रे एकत्र निर्मिते 29, 10.

खद्योतक (von खद्योत) eine best. Pflanze (mit giftiger Frucht) Suçr. 2, 231, 18.

खद्योतन (ख + द्यो०) m. die Sonne ĠATĀDH. im ÇKDr.

खधूप (ख + धूप) m. Rakete, Feuerwerk WILS. मुमुचुः खधूपान् BHATT. 3, 5. Sch. 1: आकाशे धटिकादिभिर्धूपान्मुमुचुः, Sch. 2: आकाशे धूपान्मुमुचुः.

खन्, खनति und खनते DĀTUP. 21, 14; चखान, चखतुस्, चखे P. 6, 4, 98. VOP. 3, 153. 8, 127; खन्यात् und खयात् 128; खनिवा und खावा; खनितुम्: खान् P. 6, 4, 42. 1) graben, ausgraben, aufwühlen; aufschütten, खन्यन्तु DĀTUP. इमां खन्याम्योषधिम् RV. 10, 143, 1. 97, 20. VS. 11, 10. 19. 22. 12, 98. AV. 6, 137, 1. सूकरस्त्वखनन्सा 2, 27, 2. ऊवध्यगोहं पार्थिवं खनतात् (P. 7, 1, 44, Sch.) AIT. Br. 2, 6. TS. 2, 6, 4, 2. ÇAT. Br. 1, 2, 4, 16. 8, 4, 3. 4, 5, 5, 6. अथम् KĪTJ. ÇR. 16, 4, 9. 19, 2, 6. वेदिम् 2, 6, 1, 2. अग्निं खनन्त उपस्थे पृथिव्याः VS. 11, 21. तुभ्यं खाता अन्ता अद्भुतधाः RV. 4, 50, 3. AV. 5, 13, 1. कूप ÇAT. Br. 3, 6, 4, 13. — यथा खनन्खनित्रेणा नरो वार्यधिगच्छति M. 2, 213. R. 1, 40, 25. PĀNĀT. 123, 16. खनति कूपम् P. 8, 1, 27, Sch. समासाद्य चित्तं तच्चप्यखनन्सगरात्मजाः । कुदलैर्द्रुपैश्चैव समुद्रम् MBH. 3, 887. 1. केचिदितान्यखनन्तत्र राजन्न्ये मृणालान्यखनन्तत्र विप्राः 13, 455. 4. स दण्डकाशमादाय वल्मीकमखनन्तदा 14, 1716. चानुरेव धरामिमाम् R. GORR. 1, 42, 23. तत्स्थानं यावत्खनतः PĀNĀT. 96, 18. खनन्नाखुचितं (so ist zu lesen) सिंहुः PĀNĀT. III, 16. मम विवरं खनिवा (खनित्रेणा) HIT. 30, 1. खावा MBH. 3, 13602. खान्तुम् PĀNĀT. 123, 15. सरः खनन्नायतपोत्रमाण्डलैः (वराहपूयः) RT. 1, 17. Uneig.: कात्ताकटातविशिखा न खनन्ति यस्य चित्तम् BHART. 2, 76. Vom med. können wir beim simpl. (vgl. — प्रोद्) nur das partic. praes. belegen: अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः RV. 4, 179, 6. अन्धयः खनमानाः AV. 19, 2, 3. खनमाना रसातलम् MBH. 3, 1897. — pass. खन्यते und खायते P. 6, 4, 43, Sch. खायते TS. 6, 2, 11, 11. ÇAT. Br. 3, 5, 4, 1. fgg. पृथिवी सर्वा खन्यते सगरात्मजैः R. 1, 40, 25. मृडना सलिलेन खन्यमानान्यवष्यति गिरिरपि स्थलानि PĀNĀT. I, 337. partic. खात (s. auch bes.) R. 1, 42, 6. 3, 53, 36. कीटखातस्य (तरोः) PĀNĀT. II, 96. — 2) = निखन् vergraben: न खातपूर्वं कुर्वेति न रुदन्ती धनं हरेत् MBH. 13, 3089. — caus. graben —, ausgraben lassen: प्रेङ्गावैतो खानयेत् ÇĀNĀ. ÇR. 17, 10, 2, 7. कूपाश्च वापीश्च तडागानि च खानयेत् MBH. 13, 329. 1. 3445. खनयामासुः (!) R. 2, 80, 12. अर्णवं खानयामास MBH. 3, 13601. R. 2, 110, 25.

सागरो येन खानितः 1, 5, 2. 5, 92, 8. खानयामास तद्धनम् MBH. 14, 1926. खदिरं परितः खानयेत्वा Suçr. 2, 73, 11. — desid. चिखनिष्यति P. 6, 4, 42, Sch. — intens. चङ्कन्यते und चाखायते P. 6, 4, 43. चङ्कन्तः und चाखातः. चङ्कनति und चङ्कति VOP. 20, 17.

— अभि nachgraben, aufwühlen: यो कीटभिखनेदप एवाभिखन्देत् ÇAT. Br. 11, 1, 6, 16. 2, 3, 2. 11. रोषादभ्यखनन्सर्वे पृथिवीं सगरात्मजाः R. 1, 41, 24.

— आ hineingraben, vgl. आख, आखन, आखर्, आखा, आखान, आखु.

— उद् 1) ausgraben, mit der Wurzel herausreißen, aufwühlen: कृत्या वलगातुखनन् ÇAT. Br. 3, 5, 4, 3. AIT. Br. 2, 1. कलमा इव — उत्खात-प्रतिरोपिताः RAGH. 4, 37. उत्खातमूलकैः KATHS. 20, 143. उत्खातकीलनि-वृक्षा नद्यः RĀGA-TAR. 3, 107. उत्खातद्रुम BHATT. 12, 5. गिरिं चोदखनीत् 13, 53. उत्खातं निधिषङ्कया तितितलम् BHART. 3, 5. वृषोत्खातपङ्क MEGH. 33. — 2) herausziehen, ausreißen: वपाम् (vgl. खिद्) KAUC. 44. उत्खायमानविशिख RĀGA-TAR. 3, 221. शिखोत्खातवद् KATHS. 23, 105. उच्चखाते (pass.) नलेन — अक्षिणी BHATT. 14, 32. — 3) mit der Wurzel ausreißen, vollständig zu Grunde richten. त्याजितैः फलमुत्खातिर्भूमेश्च वज्रधा नृपैः । तस्यामोदुत्त्वणो मार्गः पादपैरिव दन्तिनः ॥ RAGH. 4, 33. वज्रा-नुत्खाप 36. उत्खातलोकत्रयकाण्डक 14, 73. उत्खातशत्रु 18, 21. उच्चखान — वड्मलाम् — लक्ष्मीम् (तस्य) RĀGA-TAR. 3, 149. मूलोत्खाता वयं विनष्टाः स्मः PĀNĀT. 187, 18. — Vgl. उत्खात.

— प्रोद् aufgraben, durchgraben, ausgraben: कृत्स्नां पृथिवीमुगच्छ-त । प्रोत्खनधं प्रयत्नेन यावत्तुर्गदर्शनम् R. 1, 40, 14. प्रोत्खनन्तस्ते क्षाणी-मपि समन्ततः R. GORR. 1, 42, 23. प्रोत्खातारुतिमूलः MĀKṢH. 178, 1.

— समुद् mit der Wurzel ausgraben, vollständig zu Grunde richten: समुत्खाप कुलं नृपाणाम् PRAB. 3, 12.

— नि 1) vergraben, begraben, eingraben: कृत्या वलगात्रिखनति ÇAT. Br. 3, 5, 4, 3. VS. 3, 23. अमुरास्त्वा न्यखनन्देवास्त्वोदवपुनुरः AV. 6, 109. 3. 116, 1. 5, 31, 8. रुक्मं न दर्शते निखातम् RV. 1, 117, 5, 12. अमुं 8, 35, 1. AV. 10, 1, 19. ÇAT. Br. 3, 6, 4, 14. 7, 4, 7. KĪTJ. ÇR. 25, 7, 19. KAUC. 31. Suçr. 1, 101, 20. गम्भीरमवटं कृत्वा निखान (विराधम्) R. 3, 8, 22. RAGH. 12, 30. यः संस्थितः पुरुषो दह्यते वा निखन्यते वापि MBH. 1, 3616. JĀGṆ. 3, 1. गृहमध्यनिखातेन धनेन PĀNĀT. II, 136. HIT. I, 149. भूमौ वा निखनिष्यामि (सीताम्) BHATT. 16, 22. 4, 3. निखान त्रयस्तम्भान् RAGH. 4, 36. अष्टादश-द्वीपनिखातयूयः 6, 38. 13, 61. PRAB. 21, 10. — 2) aufgraben, aufwühlen: इमां महतीं परितो निखनदिः (सगरात्मजैः) Bhāg. P. 5, 19, 29. 3, 8, 8. — 3) ein Geschoss in den Körper bohren, infigere, defigere: हृदि रामा विरा-धस्य निखान शरोत्तमम् R. 3, 8, 7. 33, 31. 6, 88, 6. MBH. 1, 3370. RAGH. 3, 55. 12, 90. निखन्यते हृदये शोकशङ्कवः HIT. IV, 69. Git. 12, 13. BHATT. 3, 8. — caus. partic. निखानित = निखात infusus: प्रूनं निखानितमिव Suçr. 2, 456, 19.

— निम् ausgraben ÇAT. Br. 7, 5, 2, 52.

— परि umgraben, ausgraben, einen Baum ĀÇV. GRH. 2, 7. — Vgl. परिखा, परिखात.

— वि aufgraben: यतै भूमे विखनानि त्प्रिं तदर्पि रोक्तु AV. 12, 1, 35. KAUC. 137.

खन (von खन्) adj. wühlend AV. 16, 1, 3.

खनक (wie eben), f. खनकी P. 3, 1, 143, VArtt. P. 4, 1, 41. Sch. VOP.